Mgpe 011
Human Security
Important question and repeated topics
In both hindi and english
(part-1)

Topic 1
What do you mean by human security and it's scope.

Human Security is a concept that extends the traditional idea of security beyond military protection to include the safety and well-being of individuals. It emphasizes the protection of people from critical and pervasive threats and situations that endanger their lives, livelihoods, and dignity.
मानव सुरक्षा एक ऐसी अवधारणा है जो सुरक्षा के पारंपरिक विचार को सैन्य सुरक्षा से आगे बढ़ाकर व्यक्तियों की सुरक्षा और भलाई को शामिल करती है। यह लोगों को गंभीर और व्यापक खतरों और स्थितियों से सुरक्षा पर जोर देता है जो उनके जीवन, आजीविका और गरिमा को खतरे में डालते हैं।
Here's a detailed look at its scope and significance:

Definition
Human security refers to safeguarding individuals from a wide range of risks and threats that affect their survival, daily life, and dignity.
परिभाषा
मानव सुरक्षा का तात्पर्य व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार के जोखिमों और खतरों से बचाना है जो उनके अस्तित्व, दैनिक जीवन और गरिमा को प्रभावित करते हैं।

It focuses on the following:

Freedom from Fear: Protection from violence and armed conflict.
Freedom from Want: Assurance of basic needs such as food, water, healthcare, and shelter.
Freedom to Live in Dignity: Protection of human rights and the rule of law.

Scholarly Minds

यह निम्नलिखित पर केंद्रित है:

भय से मुक्ति: हिंसा और सशस्त्र संघर्ष से सुरक्षा।
अभाव से मुक्ति: भोजन, पानी, स्वास्थ्य देखभाल और आश्रय जैसी बुनियादी जरूरतों का आश्वासन।
सम्मानपूर्वक जीने की स्वतंत्रता: मानवाधिकारों की सुरक्षा और कानून का शासन।

Scope of Human Security

The scope of human security is broad and encompasses several dimensions:

Economic Security: Ensuring individuals have a stable income and access to basic resources, preventing extreme poverty and economic exploitation.
आर्थिक सुरक्षा: सुनिश्चित करना कि व्यक्तियों के पास स्थिर आय और बुनियादी संसाधनों तक पहुंच हो, अत्यधिक गरीबी और आर्थिक शोषण को रोकना।

Food Security: Providing reliable access to adequate, safe, and nutritious food for all individuals.
खाद्य सुरक्षा: सभी व्यक्तियों के लिए पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन की विश्वसनीय पहुंच प्रदान करना।

Health Security: Protecting people from diseases and ensuring access to healthcare services.
स्वास्थ्य सुरक्षा: लोगों को बीमारियों से बचाना और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच सुनिश्चित करना।

Environmental Security: Safeguarding against environmental degradation, natural disasters, and ensuring sustainable development.
पर्यावरणीय सुरक्षा: पर्यावरणीय क्षरण, प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा और सतत विकास सुनिश्चित करना।

Scholarly Minds

Personal Security: Protecting individuals from physical violence, crime, and human rights abuses.
व्यक्तिगत सुरक्षा: व्यक्तियों को शारीरिक हिंसा, अपराध और मानवाधिकारों के हनन से बचाना।

Community Security: Ensuring the safety and cohesion of communities, protecting them from ethnic or sectarian violence, and promoting social inclusion.
सामुदायिक सुरक्षा: समुदायों की सुरक्षा और एकता सुनिश्चित करना, उन्हें जातीय या सांप्रदायिक हिंसा से बचाना और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देना।

Political Security: Protecting individuals from political repression, ensuring their participation in political processes, and safeguarding their civil rights.
राजनीतिक सुरक्षा: व्यक्तियों को राजनीतिक दमन से बचाना, राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना और उनके नागरिक अधिकारों की रक्षा करना।

Scholarly Minds

Topic 2

Evolution of concept of human rights

The concept of human rights has evolved significantly over centuries, reflecting changes in societal values, legal frameworks, and philosophical understandings of what it means to be human. Here is an overview of this evolution:

Ancient and Medieval Periods

Ancient Civilizations: Early ideas about rights and justice can be found in ancient civilizations. The Code of Hammurabi (circa 1754 BC) in Babylon established a legal framework that included rights and

responsibilities of individuals. Similarly, ancient Greek philosophy, particularly the works of Plato and Aristotle, discussed justice and natural law.
प्राचीन सभ्यताएँ: अधिकारों और न्याय के बारे में शुरुआती विचार प्राचीन सभ्यताओं में पाए जा सकते हैं। बाबुल में हम्मुराबी की संहिता (लगभग 1754 ईसा पूर्व) ने एक कानूनी ढांचा स्थापित किया जिसमें व्यक्तियों के अधिकार और जिम्मेदारियाँ शामिल थीं। इसी तरह, प्राचीन ग्रीक दर्शन, विशेष रूप से प्लेटो और अरस्तू के कार्यों ने न्याय और प्राकृतिक कानून पर चर्चा की।

Religious Texts: Many religious traditions have articulated principles of human dignity and moral obligations. For example, the Hindu Vedas, the Bible, and the Quran all include elements that promote the treatment of individuals with respect and fairness.
धार्मिक ग्रंथ: कई धार्मिक परंपराओं ने मानव गरिमा और नैतिक दायित्वों के सिद्धांतों को स्पष्ट किया है। उदाहरण के लिए, हिंदू वेद, बाइबल और क़ुरान सभी में ऐसे तत्व शामिल हैं जो व्यक्तियों के साथ सम्मान और निष्पक्षता के साथ व्यवहार को बढ़ावा देते हैं।

Magna Carta (1215): The Magna Carta, signed in 1215 in England, was a landmark document that limited the powers of the king and laid the foundation for the development of individual rights and liberties. It established the principle that everyone, including the king, was subject to the law.

मैग्ना कार्टा (1215): 1215 में इंग्लैंड में हस्ताक्षरित मैग्ना कार्टा एक महत्वपूर्ण दस्तावेज था जिसने राजा की शक्तियों को सीमित कर दिया और व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रताओं के विकास की नींव रखी। इसने यह सिद्धांत स्थापित किया कि राजा सहित हर कोई कानून के अधीन है।

Early Modern Period

Enlightenment Philosophers: The Enlightenment period (17th and 18th centuries) saw significant developments in the concept of human rights. Philosophers such as John Locke, Jean-Jacques

Scholarly Minds

Rousseau, and Voltaire argued for the natural rights of individuals, including life, liberty, and property. These ideas influenced the development of modern democratic states.
प्रबोधन दार्शनिक: प्रबोधन काल (17वीं और 18वीं शताब्दी) में मानवाधिकारों की अवधारणा में महत्वपूर्ण विकास हुआ। जॉन लॉक, जीन-जैक्स रूसो और वोल्टेयर जैसे दार्शनिकों ने जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति सहित व्यक्तियों के प्राकृतिक अधिकारों के पक्ष में तर्क दिया। इन विचारों ने आधुनिक लोकतांत्रिक राज्यों के विकास को प्रभावित किया।

American Declaration of Independence (1776): The American Declaration of Independence asserted that "all men are created equal" and endowed with "unalienable Rights" including "Life, Liberty, and the pursuit of Happiness." This was a revolutionary assertion of individual rights against colonial rule.
अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा (1776): अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा ने घोषणा की कि "सभी मनुष्य समान बनाए गए हैं" और "जीवन, स्वतंत्रता और खुशी की खोज" सहित "अपरिवर्तनीय अधिकारों" से संपन्न हैं। यह औपनिवेशिक शासन के खिलाफ व्यक्तिगत अधिकारों का क्रांतिकारी दावा था।

French Declaration of the Rights of Man and of the Citizen (1789): This declaration, emerging from the French Revolution, proclaimed that all men are born free and equal in rights. It emphasized the principles of liberty, property, security, and resistance to oppression.
फ्रांसीसी मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा (1789): फ्रांसीसी क्रांति से उभरी यह घोषणा, सभी मनुष्यों के स्वतंत्र और अधिकारों में समान जन्म की घोषणा करती है। इसमें स्वतंत्रता, संपत्ति, सुरक्षा और उत्पीड़न के प्रतिरोध के सिद्धांतों पर जोर दिया गया।

19th and Early 20th Centuries

Abolition of Slavery: The 19th century witnessed significant human rights advancements with the abolition of slavery in many parts of the world. The movement was driven by moral, economic, and

Scholarly Minds

political factors and was a major step towards recognizing the inherent dignity of all individuals.
गुलामी का उन्मूलन: 19वीं सदी ने दुनिया के कई हिस्सों में गुलामी के उन्मूलन के साथ महत्वपूर्ण मानवाधिकार प्रगति देखी। यह आंदोलन नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों द्वारा संचालित था और सभी व्यक्तियों की अंतर्निहित गरिमा को मान्यता देने की दिशा में एक बड़ा कदम था।

Women's Rights Movement: The late 19th and early 20th centuries saw the rise of the women's suffrage movement, advocating for women's right to vote and participate equally in society. This period marked a significant shift towards gender equality.
महिला अधिकार आंदोलन: 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में महिला मताधिकार आंदोलन का उदय हुआ, जिसने महिलाओं के वोट देने और समाज में समान रूप से भाग लेने के अधिकार की वकालत की। इस अवधि ने लैंगिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया।

Post-World War II Era

Universal Declaration of Human Rights (1948): In response to the atrocities of World War II, the United Nations adopted the Universal Declaration of Human Rights (UDHR) in 1948. This landmark document outlined fundamental human rights to be universally protected, including civil, political, economic, social, and cultural rights.
मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948): द्वितीय विश्व युद्ध की अत्याचारों की प्रतिक्रिया में, संयुक्त राष्ट्र ने 1948 में मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (यूडीएचआर) को अपनाया। इस ऐतिहासिक दस्तावेज़ ने नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों सहित मौलिक मानवाधिकारों को सार्वभौमिक रूप से संरक्षित करने की रूपरेखा तैयार की।

International Human Rights Treaties: Following the UDHR, numerous international treaties were developed to protect specific rights. These include the International Covenant on Civil and Political Rights

Scholarly Minds

(ICCPR) and the International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights (ICESCR), both adopted in 1966.
अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संधियाँ: यूडीएचआर के बाद, विशिष्ट अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ विकसित की गईं। इनमें 1966 में अपनाए गए नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा (आईसीसीपीआर) और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा (आईसीईएससीआर) शामिल हैं।

Contemporary Developments

Regional Human Rights Systems: Regional human rights systems have been established to address specific local issues. These include the European Convention on Human Rights (1950), the American Convention on Human Rights (1969), and the African Charter on Human and Peoples' Rights (1981).
क्षेत्रीय मानवाधिकार प्रणाली: विशिष्ट स्थानीय मुद्दों को संबोधित करने के लिए क्षेत्रीय मानवाधिकार प्रणालियाँ स्थापित की गई हैं। इनमें यूरोपीय मानवाधिकार अभिसमय (1950), अमेरिकी मानवाधिकार अभिसमय (1969), और अफ्रीकी मानव और लोगों के अधिकारों पर चार्टर (1981) शामिल हैं।

Expansion of Rights: The concept of human rights has expanded to include new categories such as environmental rights, digital rights, and LGBTQ+ rights. These developments reflect the evolving nature of society and the need to address contemporary challenges.
अधिकारों का विस्तार: मानवाधिकारों की अवधारणा का विस्तार पर्यावरणीय अधिकारों, डिजिटल अधिकारों और एलजीबीटीक्यू+ अधिकारों जैसी नई श्रेणियों को शामिल करने के लिए किया गया है। ये विकास समाज की बदलती प्रकृति और समकालीन चुनौतियों का सामना करने की आवश्यकता को दर्शाते हैं।

Human Rights Organizations: Numerous non-governmental organizations (NGOs) and international bodies, such as Amnesty International, Human Rights Watch, and the UN Human Rights

Scholarly Minds

Council, work to monitor, protect, and promote human rights globally.
मानवाधिकार संगठन: एमनेस्टी इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स वॉच और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद जैसे कई गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) और अंतर्राष्ट्रीय निकाय, वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों की निगरानी, सुरक्षा और संवर्धन के लिए काम करते हैं।

The evolution of the concept of human rights reflects a growing recognition of the inherent dignity and equality of all human beings. From ancient legal codes to modern international treaties, the journey of human rights continues to adapt to new challenges and expand its scope to ensure the protection and empowerment of every individual.
मानवाधिकार की अवधारणा का विकास सभी मनुष्यों की अंतर्निहित गरिमा और समानता की बढ़ती मान्यता को दर्शाता है। प्राचीन कानूनी संहिताओं से लेकर आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संधियों तक, मानव अधिकारों की यात्रा नई चुनौतियों के अनुरूप ढलने और प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षा और सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए अपने दायरे का विस्तार करने के लिए जारी है।

Scholarly Minds